भावना मानव समाज का अमृत

हर घटना का कोई न कोई कारण होता है। हर क्रिया एक विज्ञान है, जो हो रहा है एक खेल नहीं विज्ञान है। यदि खेल है तो क्यों नहीं सिर्फ आनंद के लिए खेला जाता है? मानव समाज का विनाश प्रकृति की मजबूरी होती है, कोई खेल नहीं। इसे कोई नकार नहीं सकता, यदि नकारता है तो अपने आपको है क्योंकि यह का एक विज्ञान प्रकृति का होता है। समाज में ऐसा

यह नकारता स्वयं प्रकृति है जिस पर नियंत्रण मानव कोई

उदाहरण भी नहीं है कि जो मानव रूप में सब कुछ अपने नियंत्रण में करके दिखाया हो। सभी को प्रकृति का ही सहयोग लेना पड़ता है। जितने भी महापुरुष हुए हैं जिन्हें ईश्वर भी कहा जाता है उन्होंने भी प्रकृति की ही पूजा की है। यदि उन्हें विशेष शक्ति मिली है तो यह प्रकृति व सूर्यदेव से ही मिली है। कोई भी महापुरुष सत्य पुरुष को प्रणाम जरूर किया है पर पूजा उन्होंने प्रकृति की ही की है। प्रकृति का यह सहयोग हर किसी के लिए आवश्यक है। आज प्रकृति को सत्य मानकर इसके साथ समन्वय स्थापित करके हर व्यक्ति को अपना विकास करना चाहिए। इतना जान लेने के बाद यह स्वाभाविक सवाल उठता है कि क्या भावना एक विज्ञान है? यदि विज्ञान है तो इसका पूर्ण विकास क्यों नहीं हो रहा है? क्या इसका इंतजार हो रहा है कि इसे सिद्ध नहीं किया जा सकता? पर यही एक ऐसा विज्ञान है जिसे हर व्यक्ति स्वयं करके देख सकता है। फिर इस विज्ञान को मानव समाज अपने जीवन में क्यों नहीं कर पा रहा है? यह प्रश्न हर व्यक्ति के सोचने का है इसलिए उसे अपने आप में अवश्य सोचना चाहिए।

✱भावना भी एक विज्ञान है✱

इसे मानव समाज को अवश्य मानना चाहिए। इसकी अपनी पहचान है किसी अन्य की नहीं। अपने आपको पहचान करके ही सभी को पहचाना जा सकता है, इसलिए सबसे पहले अपनी पहचान करनी चाहिए। अपनी पहचान सत्य है, इसका परीक्षण आप कभी भी अपने अंदर करके देख सकते हैं। अब प्रकृति के तत्व की बुराई को मत देखिए, सिर्फ उसके सत्य को देखिए और सोचिए क्यों ऐसा हो रहा है? परिणाम आपके सामने अपने आप आएगा। किसी से पूछने की जरूरत नहीं है। परिणाम देख कर आप अपनी भावना को पहचानिए और उसके प्रदूषण को मिटा डालिए।

यदि आप किसी के प्रति गलत विचार नहीं लाते हैं तो आपके अन्दर गलत भावना नहीं बनेगी। व्यक्ति सोचता है हम जो काय शरीर से करते है वही होता है, पर वह जो सोचता है जो उसकी भावना से निकलता है वह भी होता है किसी के प्रति गलत भावना बनाने से उसकी आपनी शक्ति क्षीण होती है, जिसके प्रति गलत भावना बनी उसकी नहीं, वह और मजबूत होता है।

✱इस प्रकृति में आप अच्छी तरह देख रहे हैं कि हर किसी का निर्माण बीज से ही होता है। प्रकृति में जिसका बीज डाला जाएगा उसका उतना ही अधिक विकास होगा। इसलिए आप लोग भी शुद्ध भावना रूपी बीज का रोपण प्रकृति में करिए। इसका लाभ आपके साथ हर किसी को मिलेगा। जिसके परिणामस्वरूप प्रकृति अपने आप आनंदित हो जाएगी।✱

भावना, मानव शरीर में उत्पन्न हुई क्रिया का परिणाम है, इस क्रिया पर प्रकृति के वातावरण का पूरा प्रभाव पड़ता है। इसके बाद शरीर बाह्य क्रिया शुरु करता है। इन दोनों का केंद्र बिंदु विवेक होता है जो सत्य असत्य का फैसला करता है एवं जिसे शरीर पूरी तरह स्वीकारता है। भावना स्वयं ही शुद्ध की जा सकती है। ✱जिसकी भावना शुद्ध हो जाती है उसे प्रकृति एक उपहार देती है।✱ यह व्यक्ति जिसे यह उपहार मिल जाता है उसका असत्य कुछ नहीं बिगाड़ सकता बल्कि वह स्वयं सत्य हो जाएगा। और उसके पास एक विशेष शक्ति होगी जिससे यह इच्छानुसार भावना छोड़कर कार्य करवा लेगा। इसका भी विज्ञान है जो स्वतः होता है। प्रकृति के तत्व द्वारा आकृति का निर्माण होता है और जब प्रकृति क्रिया शुरु करती है तो इसकी भावना प्रकृति के तत्व को छेड़ते हैं। यह नियंत्रण इनके ऊपर नहीं, प्रकृति के ऊपर होता है, पर मानव समाज का नियंत्रण भावना पर होता है। यदि व्यक्ति चाहे तो अपने अंदर सिर्फ अच्छी भावना उत्पन्न कर सकता है। प्रकृति में जो भी छोड़ा जाता है वह नष्ट नहीं होता है। उसका असत्य जलकर सत्य में परिवर्तित